वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वैद प्रकाश

मासिक पत्र (6-7 प्रतिमाह) मूल्यः ५ रुपये (३०/-वार्षिक) फरवरी २०१८

कुल पृष्ठ संख्या २०, वजनः 40 ग्राम
प्रकाशन तिथिः 4 फरवरी 2018

अन्तःपथ

ईश्वर की सिद्धि तीनों प्रमाणों से *–स्मृतिशेष आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी*	३ से ५
बकरी को शेर कैसे बनाए? *–डॉ. विवेक आर्य*	५ से ७
कैसे होता है वेद का भाष्य? *कुमार आर्य*	७ से ८
"ऋषि दयानन्दकृत संस्कार विधि की रचना" का उद्देश्य, ग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय एवं इतर विषय" *–मनमोहन कुमार आर्य,*	८ से ११
"वैदिक विवाह का स्वरूप और आधुनिक विवाह परम्परा में धन का अपव्यय" *–मनमोहन कुमार आर्य,*	११ से १६
ईश्वर सर्वरक्षक	१६ से १७
ईश्वर हमारी रक्षा अनेक प्रकार से करता है	१७ से १८

नम्रता से बात करना, हर एक का आदर करना, शुक्रिया अदा करना और यदि आवश्यक हो तो, माफी भी माँग लेना, ये गुण जिसके पास हैं, वो सदा सबके करीब और सबके लिए खास है।

महामूर्ख कौन?

एक राजा था। वह जनता की सुख, समृद्धि, सुरक्षा, न्याय आदि की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। बल्कि वह यह समझता था कि प्रजा, राज्य और धनादि सभी कुछ राजा की सेवा-शुश्रूषा और आनन्द के लिए होता है। अत: राज्य के विकास के लिए कोई काम न करता था।

एक बार राजा के मन में आया कि हर वर्ष एक व्यक्ति को 'महामूर्ख' की उपाधि से विभूषित किया जाये। अत: उपहार में देने के लिए एक सुन्दर छड़ी तैयार कराई।

राजा ने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया, "कोई ऐसा व्यक्ति उपस्थित करो जो संसार में रहते हुए भी संसार से अनोखा हो।"

पर्याप्त खोज के पश्चात् एक दिन राजा को सन्देश मिला, "महाराज, आपके आदेश के अनुसार उस व्यक्ति की बहुत खोज की गई। अनेक प्रयत्नों के बाद यह व्यक्ति मिला है जो दो ही वस्त्र पहनता है, सादा भोजन करता है, झोंपड़ी में रहता है। उसे कई बार लोगों ने फल, मिठाई और सुन्दर भोजन दिया, पर उसने लेने से मना कर दिया है। कई धनिकों ने कुटिया बनवाकर देने की इच्छा प्रकट की, परन्तु उसने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, 'मुझे इन चीजों की बिल्कुल इच्छा नहीं।' हमें तो यही एक अनोखा व्यक्ति लगा जो कि आपकी कसौटी पर खरा उतरता है।"

राजा ने उसे दरबार में बुलाकर 'महामूर्ख' की उपाधि और छड़ी से सम्मानित किया।

कुछ समय के पश्चात् राजा बीमार हो गया। हालत बिगड़ती गई और राजा के बचने की आशा न रही। शिष्टाचारवश लोग हालचाल पूछने आने लगे।

राजा की इस बीमारी की सूचना उस 'महामूर्ख' उपाधि से सम्मानित व्यक्ति के पास भी पहुँच गई। वह उस छड़ी के साथ राजा के पास पहुँचा और हालचाल पूछा। राजा ने कहा, "बस, अब तो चलने की तैयारी है।"

उस व्यक्ति ने एकान्त देखकर बड़े भोलेपन से राजा से पूछा, "राजन्! जहाँ आप जा रहे हैं कितने दिनों के लिए जा रहे हैं और वहाँ से कब लौटेंगे? क्या साथ में रानियाँ, सेवक, नौकर-चाकर भी सेवा के लिए जा रहे हैं?"

राजा ने हँसते हुए कहा, "कोई भी नहीं।"

उस व्यक्ति ने फिर प्रश्न किया, "जहाँ जाना है वहाँ के लिए आपने पूरी तैयारी कर ली होगी? आप तो राजा हैं, बहुत सारा सामान भी ले जाने के लिए रखवा लिया होगा।"

राजा खिन्न मन से बोला, "इसीलिए तो तुझे महामूर्खता की छड़ी दी गई है। तुझे तो इतना भी नहीं पता कि वहाँ साथ में कुछ भी नहीं जाता। सब कुछ यहीं का यहीं रह जाता है।"

राजा का उत्तर सुनकर महामूर्ख ने और भी अधिक भोलेपन से पूछा, "हे राजन्! इतना तो अवश्य बताएँ कि आप कहाँ जा रहे हैं? यह तो आपको पता ही होगा।"

राजा ने ठंडी साँस लेते हुए कहा, "इसका तो किसी को भी पता नहीं कि मर कर कोई कहाँ जाता है? दूसरी बात यह भी है कि मैंने कभी इसके बारे में सोचा भी नहीं।"

यह सुनकर वह महामूर्ख समझा जाने वाला व्यक्ति बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला, "हे राजन्! आप से बढ़कर महामूर्ख और कौन होगा जिसे यही नहीं पता कि कहाँ जाना है? अत: यह छड़ी और उपाधि अब आप ही सम्भालिए। इसके सब से अच्छे पात्र तो आप ही हैं जो सब कुछ प्राप्त करके भी अभागे ही बने रहे और अपने लिए कुछ भी न किया।"

जरा सोचो। कहीं हम भी तो राजा की नकल नहीं कर रहे? कहीं ईश्वर-भक्ति से विमुख होकर संसार की चकाचौंध में ही नहीं फँसे हैं?

वेदप्रकाश

संस्थापक : **स्वर्गीय श्री गोविन्दराम हासानन्द**

वर्ष ६७ अंक ७ वार्षिक मूल्य : तीस रुपये, एक प्रति ५ रुपये, फरवरी, २०१८

सम्पा॰ **अजयकुमार** पूर्व सम्पादक : स्व॰ **स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती**

ईश्वर की सिद्धि तीनों प्रमाणों से

–स्मृतिशेष आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी

जैसे विज्ञान के क्षेत्र में वस्तुएँ तीनों [प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द] प्रमाणों से सिद्ध होती हैं, और मानी जाती हैं, वैसे ही ईश्वर भी तीनों प्रमाणों से सिद्ध होता है, अत: उनको मानना चाहिए। परन्तु ईश्वर का प्रत्यक्ष नेत्रादि इन्द्रियों से नहीं होता है, बल्कि मनादि अन्त:करण से होता है। ईश्वर की सिद्धि तीनों प्रमाणों से होती है, इसे निम्न प्रकार से समझना चाहिए।

ईश्वर की सिद्धि प्रत्यक्ष प्रमाण से:

प्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है, एक बाह्य, दूसरा आन्तरिक। नेत्रादि इन्द्रियों से रूपादि विषय वाली वस्तुओं का जो प्रत्यक्ष होता है, वह बाह्य प्रत्यक्ष कहलाता है; और मन-बुद्धि आदि अन्त:करण से सुख-दु:ख, राग-द्वेष, भूख-प्यास आदि का जो प्रत्यक्ष होता है, वह आन्तरिक प्रत्यक्ष कहलाता है।

जैसे रूपादि विषय वाली वस्तु को देखने के लिए नेत्रादि इन्द्रियों का स्वस्थ-स्वच्छ तथा कार्यकारी होना आवश्यक है, वैसे ही आत्मा-परमात्मा को प्रत्यक्ष करने के लिए मन-बुद्धि आदि अन्तकरण का भी स्वस्थ तथा पवित्र होना अनिवार्य है। जैसे आँख में धूल गिर जाने पर या सूजन हो जाने पर या मोतियाबिन्द हो जाने पर वस्तु दिखाई नहीं देती, वैसे ही राग-द्वेषादि के कारण मन आदि अन्त:करण के अपवित्र या रजोगुण के कारण चंचल हो जाने पर आत्मा-परमात्मा का प्रत्यक्ष नहीं होता। जैसे सुख-दु:खादि विषयों का प्रत्यक्ष नेत्रादि बाह्य इन्द्रियों से नहीं होता, केवल रूप-रसादि विषयों का ही होता है, वैसे ही आत्मा-परमात्मा, मन-बुद्धि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रत्यक्ष भी नेत्रादि इन्द्रियों से नहीं होता, मन आदि अन्त:करण से होता है, यह ईश्वर के प्रत्यक्ष करने की पद्धति है।

ईश्वर की सिद्धि अनुमान प्रमाण से:

इसी प्रकार अनुमान प्रमाण से भी ईश्वर की सिद्धि होती है। कोई भी

वस्तु यथा मकान, रेल, घड़ी आदि बिना बनाने वाले के नहीं बनती, चाहे हमने मकान, रेल, घड़ी आदि के बनाने वाले को अपनी आँखों से न भी देखा हो, तो भी उसके बनाने वाले की सत्ता को मानते हैं। ठीक इसी प्रकार से वैज्ञानिक लोग इन पृथ्वी, सूर्यादि की उत्पत्ति करोड़ों वर्ष पुरानी मानते हैं। इससे भी सिद्ध है कि इनको बनाने वाला भी कोई न कोई अवश्य ही है। क्योंकि ये पृथ्वी, सूर्यादि जड़ पदार्थ अपने आप बन नहीं सकते, जैसे कि रेल आदि अपने आप नहीं बन सकते। और न सूर्यादि को मनुष्य लोग बना सकते हैं, क्योंकि मनुष्यों में इतना सामर्थ्य और ज्ञान नहीं है। इसलिए जो इन्हें बनाता है, वही ईश्वर है।

ईश्वर की सिद्धि शब्द प्रमाण सेः

जिन साधकों (ऋषियों) ने यम नियमादि योग के आठ अंगों का अनुष्ठान करके मन आदि अन्तःकरण को एकाग्र व पवित्र बनाया, वे कहते हैं कि समाधि में आत्मा-परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है। किन्तु यह प्रत्यक्ष नेत्रादि इन्द्रियों से होने वाले बाह्य प्रत्यक्ष के समान रंग रूप वाला न होकर, सुख-दुःखादि के समान आन्तरिक अनुभूति है। ऋषियों का अनुभव यह है, जो हमारे लिए शब्द प्रमाण है–

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।

अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥

–मुण्डकोपनिषद् 3-1-5

अर्थः यह भगवान् (ईश्वर) सदा सत्य आचरण से, तप से, यथार्थ ज्ञान से और ब्रह्मचर्य से प्राप्त किया जाता है। वह शरीर के भीतर ही प्रकाशमय (ज्ञानस्वरूप) और शुद्ध (पवित्र) स्वरूप में विद्यमान है। योगी लोग रागद्वेष आदि दोषों को नष्ट करके समाधि में उसे देख (अनुभव कर) लेते हैं।

जैसे वैज्ञानिकों के विवरण पृथ्वी, सूर्य, आकाश-गंगाओं आदि के संबंध में शब्द प्रमाण के रूप में स्वीकार किये जाते हैं, क्योंकि उन्होंने उन विषयों को ठीक-ठीक जाना है। इसी प्रकार से ऋषियों के भी ईश्वर सम्बन्धी विवरण शब्द प्रमाण के रूप में अवश्य ही स्वीकार करने चाहिए, क्योंकि उन्होंने भी समाधि के माध्यम से ईश्वर को ठीक-ठीक जाना है।

इसलिए तीनों प्रमाणों से ईश्वर की सत्ता सिद्ध है। नास्तिक लोग

उपर्युक्त तीनों प्रमाणों पर विशेष ध्यान दें और शुद्ध अन्तःकरण से आत्मा के द्वारा ईश्वर के आन्तरिक प्रत्यक्ष को स्वीकार करें, यही न्याय की बात है।

अन्यथा आँख से न दीखने वाली वायु, शब्द, गन्ध, सुख-दुःख, मन-बुद्धि, भूख-प्यास, दर्द आदि को और पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति (Gravitational Force), विद्युत तरंगों (Electro-Magnatic Waves), अल्फा (Alpha), बीटा (Beta), गामा (Gamma), और एक्स किरणों (x-Rays) को भी मानना छोड़ दें। यदि इनको मानना नहीं छोड़ते हैं तो ईश्वर की सत्ता को भी स्वीकार करें।

[स्रोतः 'ईश्वर का खण्डन तथा मण्डन', पृ. 8-10, प्रस्तुतिः भावेश मेरजा]

बकरी को शेर कैसे बनाए?

-डॉ विवेक आर्य

(सत्य इतिहास पर आधारित)

मोहन गुप्ता हिन्दू परिवार से थे। आप पेशे से कंप्यूटर इंजीनियर थे। आपका मूर्ति पूजा एवं पौराणिक देवी देवताओं की कथाओं में अटूट विश्वास था। आप बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत थे। आपको अनेक बार कंपनी की ओर से विदेश में कई महीनों के लिए कार्य के लिए जाना पड़ता था। एक बार आपको अफ्रीका में केन्या कुछ महीनों के लिए जाना पड़ा। केन्या की राजधानी नैरोबी में आपको कंपनी की ओर से मकान मिला। आपकी कंपनी द्वारा हैदराबाद से एक अन्य इंजीनियर भी आया था जिसके साथ आपको मकान साँझा करना था।

हैदराबाद से आया हुआ इंजीनियर कट्टर मुसलमान, पाँच वक्त का नमाज़ी और बकरे जैसे दाढ़ी रखता था। उसने आते ही मोहन गुप्ता से धार्मिक चर्चा आरम्भ कर दी। मोहन गुप्ता से कभी वह पूछता आपके श्रीकृष्ण जी ने नहाती हुई गोपियों के कपड़े चुराये थे। क्या आप उसे सही मानते हैं? कभी कहता आपके इंद्र ने वेश बदलकर अहिल्या के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाया था। क्या आप ऐसे इंद्र को देवता मानेंगे? मोहन गुप्ता के लिए यह अनुभव बिलकुल नवीन था। उन्होंने अपने जीवन में धर्म का अर्थ मंदिर जाना, मूर्ति पूजा करना, भोग लगाना, ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देना, तीर्थ यात्रा करना ही समझा था। धर्म ग्रंथों में क्या लिखा है। यह तो पंडित लोगों का विषय है। यह संस्कार उन्हें अपने घर में मिला था। उनका मज़हबी साथी आते-जाते इस्लाम का बखान और पुराणों पर आक्षेप करने में

कोई कसर नहीं छोड़ता था। तंग आकर उन्होंने अपने ऑफिस में एक भारतीय जो हिन्दू था उससे अपनी समस्या बताई। उस भारतीय ने कहा यहाँ नैरोबी में हिन्दू मंदिर है। उसमें जाकर पंडितों से अपनी समस्या का समाधान पूछिए। मोहन गुप्ता अत्यन्त श्रद्धा और विश्वास के साथ स्थानीय हिन्दू मंदिर गए। मंदिर के पुजारी को अपनी समस्या बताई। पुजारी पहले तो अचरज में आया फिर हरि ओम कह चुप हो गया।

मोहन निराश होकर भारी कदमों में वापिस लौट आये। हताशा और भारी कदमों के साथ वह लौट रहे थे कि उन्हें नैरोबी का आर्यसमाज मंदिर दिखा। उन्होंने मंदिर में प्रवेश किया तो अग्निहोत्र चल रहा था। उन्होंने अग्निहोत्र के पश्चात प्रवचन सुना और उससे स्वामी दयानन्द, वेद और सत्यार्थ प्रकाश के विषय में उन्हें जानकारी मिली। प्रवचन के पश्चात उन्होंने अपनी समस्या से समाज के अधिकारियों को अवगत करवाया। समाज के प्रधान ने उन्हें स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश देते हुए कहा–आपकी समस्या का समाधान इस पुस्तक में है। 14वें समुल्लास में आपको आपकी सभी शंकाओं का समाधान मिल जायेगा।

मोहन गुप्ता धन्यवाद देते हुए लौट गए। अगले एक सप्ताह तक उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय किया। 14वें समुल्लास को पढ़ते ही उनके निराश चेहरे पर चमक आ गई। बकरी अब शेर बन चुकी थी। शाम को उनके साथ कार्य करने वाले मुस्लिम इंजीनियर वापिस आये। मुस्लिम इंजीनियर ने आते ही मोहन गुप्ता से पूछा आपको मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं मिला तो इस्लाम स्वीकार कर लो। अब मोहन गुप्ता की बारी थी। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के 14वें समुल्लास के आधार पर कुरान के विषय पर प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिए। मजहबी मुसलमान के होश उड़ गए। उसने पूछा तुम्हें यह सब किसने बताया।

मोहन ने उसे सत्यार्थ प्रकाश के दर्शन करवाए। देखते ही मजहबी मुसलमान के मुँह से निकला। इस किताब ने तो हमारे सारे मंसूबों पर पानी फेर दिया। नहीं तो अभी तक हम सारे हिन्दुओं को मुसलमान बना चुके होते। मोहन ने अपने हृदय से स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का धन्यवाद किया। भारत वापिस आकर वह सदा के लिए आर्यसमाज से जुड़ गए एवं आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्ता बन गए।

वीर सावरकर के शब्दों में स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश ने हिन्दू

जाति की ठंडी पड़ी रगों में उष्णता का संचार कर दिया।

अगर समस्त हिन्दू समाज स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के उपदेश को मानने लग जाये तो हिन्दू (आर्य) जाति संसार में फिर से विश्व गुरु बन जाये।

कैसे होता है वेद का भाष्य?

–कुमार आर्य

ईश्वर ने हम मनुष्यों की सर्व प्रकार की उन्नति के लिये सृष्टि के आदि में वेद का ज्ञान चार ऋषियों के द्वारा प्रकट किया है। ईश्वर प्रदत वेद के 20416 मंत्रों में वह सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान समाहित है। जो हम मनुष्यों की उन्नति के लिये आवश्यक है। इसी कारण से वेदभाष्य एक बहुत ही पवित्र और पुण्य का कार्य है। समय-समय पर जन सामान्य की सुविधा हेतु ऋषियों और विद्वानों ने सरल भाषा में वेदभाष्य किये ताकि कोई मनुष्य वेद ज्ञान से वंचित न रह जाए। 19वीं शताब्दी में भी युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद जी ने ऋषि शैली में वेदभाष्य करके मनुष्य जाति का महाकल्याण किया है। आज भी वैदिक गुरुकुलों में योग्य विद्वानों के द्वारा वेदभाष्यों का कार्य सम्पन्न किया जाता है। आर्यसमाज के विद्वान् स्वामी दयानंद की वेद भाष्य शैली का अनुसरण करते हैं। स्वामी दयानन्द प्राचीन ऋषियों की वेद भाष्य शैली का अनुसरण करते है। इसी लेख में हम वे नियमों का उल्लेख करेंगे जिनके आधार पर वेदमंत्र का भाष्य किया जाता है। ऐसा देखा गया है कि जो मंत्र ऋग्वेद में हैं उनके बहुत से मंत्र यजुर्वेद में भी पाए जाते हैं, ऐसे ही वेदमंत्र बहुत से मिलते जुलते हैं और कई वेदों में एक से हैं। परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग हैं। ऐसा क्यों है? वह इन नियमों से जाना जा सकता है:–

(१) वेदमंत्र में वर्णित कर्मों से ही पदार्थ के नाम का ज्ञान होता है। कर्मों के अनुसार ही वस्तु के नाम रखे जाते हैं।

(२) किसी भी मंत्र का अर्थ करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अर्थ किसी भी वेद के अन्य किसी मंत्र के अर्थ के विपरीत न हो जाए। यानी कि वे एक-दूसरे के परस्पर विरोधी या खंडन करने वाले अर्थ न हो।

(३) जो भी वेदमंत्र किया जाए वह तर्क संगत होना चाहिए।

(४) जो भी वेदमंत्रों का प्रसंग चल रहा हो उस प्रसंग को छोड़कर

वेदमंत्र का अर्थ नहीं किया जाना चाहिए।

(५) प्रत्येक मन्त्र का कोई न कोई देवता होता है जैसे कि इन्द्र, अग्नि, वायु, वरुण आदि। देवता का अर्थ है विषय यानी कि यह अमुक देवता मंत्र का मुख्य विषय है। इसी कारण वेदों के जो मंत्र एक जैसे हैं उनके देवता और प्रसंग एक जैसे होने पर भी उनके अर्थ भी अलग होते हैं।

(६) वेदमंत्र में जो स्वर और प्रत्यय आदि हैं उनका अर्थ व्याकरण (अष्टाध्यायी और महाभाष्य) के नियमों के अनुसार करना चाहिए। यदि ऐसा करने पर भी अर्थ असंगत होने लगें तो प्रसंग को विचारकर अर्थ करना चाहिए।

मुख्य रूप से निरुक्त के इन नियमों के अनुसार ही वेदमंत्र का रहस्य प्रकट होता है। और आर्य समाज के विद्वान् ऋषियों की इसी शैली के ही भाष्य करते हैं। परन्तु ये बात केवल आर्य समाज के विद्वानों की ही नहीं है बल्कि प्रत्येक मनुष्य ही वेदभाष्य करने की योग्यता का सम्पादन कर सकता है यदि वह ऋषि दयानन्द जी द्वारा कहे सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास के पाठ्यक्रम के अनुसार ग्रंथों को पढ़े। क्योंकि आर्य समाज का तीसरा नियम ये कहता है कि "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है" इसके बजाए ऋषि ने ये नहीं बोला कि "सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना-पढ़ाना आर्यों का परम धर्म है।"

"ऋषि दयानन्दकृत संस्कार विधि की रचना का उद्देश्य, ग्रन्थ का संक्षिप्त परिचय एवं इतर विषय"

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

महर्षि दयानन्द जी ने संस्कार विधि की रचना की है। इस ग्रन्थ में 16 संस्कारों को करने का विधान है। महर्षि ने लिखा है कि मनुष्यों के शरीर और आत्मा के उत्तम होने के लिए निषेक अर्थात् गर्भाधान से लेके श्मशानान्त अर्थात् अन्त्येष्टि-मृत्यु के पश्चात् मृतक शरीर का विधिपूर्वक दाह करने पर्यन्त 16 संस्कार होते हैं। वह कहते हैं कि शरीर का आरम्भ गर्भाधान और शरीर का अन्त मृत्यु होने पर मृतक शरीर को भस्म कर देने तक सोलह प्रकार के उत्तम संस्कार करने होते हैं। संस्कार विधि में सभी संस्कारों को करने की विधि दी गई है। यह संस्कार व विधि वेद सम्मत है। इन सभी संस्कारों का विधान ऋषि वेद मंत्रों के आधार पर ही करते हैं। वे संस्कार संबंधी सभी क्रियायें वेद एवं शास्त्रों के आधार पर ही करने का विधान ग्रन्थ

में दिया गया है। संस्कार की विधि आरम्भ करने से पहले ऋषि दयानन्द जी ने प्रत्येक संस्कार के आरम्भ में संस्कार क्यों किया जाता है व उसे करने का क्या महत्त्व अथवा लाभ है, इसका उल्लेख भी किया है। प्रथम हम इन सोलह संस्कारों के नामों को जान लेते हैं। ये हैं गर्भाधान, पुंसवनम्, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, संन्यास एवं अन्त्येष्टिकर्मविधि। अन्त्येष्टि कर्म जीवात्मा का संस्कार न होकर मृतक शरीर को भस्म करने की वैदिक व वैज्ञानिक विधि है। इसलिये यह 16 संस्कारों में सम्मिलित नहीं है। इसका स्थान 17वाँ है।

महर्षि दयानन्द जी ने संस्कार विधि में 16 संस्कारों व अन्त्येष्टि कर्म की विधि दी है। सभी संस्कारों के आरम्भ में प्रमाण-वचन और उनके प्रयोजन से अवगत कराया गया है। इसके पश्चात् संस्कार में जो-जो कर्तव्य विधि है, उसे क्रम से दिया गया है। संस्कार विधि के आरम्भ में सामान्य प्रकरण लिखकर सभी संस्कारों के आरम्भ में की जाने वाली विधि को भी प्रस्तुत किया गया है। महर्षि ने संस्कारों के विषय में कहा है कि सोलह संस्कारों के द्वारा मनुष्य का शरीर और आत्मा संस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं। इन संस्कारों को करने से सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। इसलिए संस्कार विधि के अनुसार सभी संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

आजकल समाज में सभी 16 संस्कार प्रायः नहीं किये जाते हैं। नामकरण, चूड़ाकर्म, विवाह व अन्त्येष्टि कर्म ही मुख्यतः प्रचलित हैं। गुरुकुलों में देश की जनसंख्या का एक बहुत छोटा भाग ही शिक्षा प्राप्त करता हैं जहाँ उपनयन और वेदारम्भ संस्कार भी होते हैं। हमें लगता है कि आजकल समाज पर पाश्चात्य विचारों व परम्पराओं का प्रभाव है। लोगों में वैदिक धर्म व संस्कृति को जानने व समझने की इच्छा शक्ति का भी अभाव दिखाई देता है। इसी कारण संस्कारों के महत्त्व से अपरिचित वा अनभिज्ञ लोग सभी संस्कारों को नहीं कराते हैं। आर्यसमाज के विद्वान भी अपने लेखों व प्रवचनों में सभी संस्कारों को कराये जाने के पक्ष में बहुत ही कम चर्चा करते हैं। हमें लगता है कि कहीं न कहीं हमारे विद्वान भी संस्कारों के महत्त्व व लाभों से पूरी तरह से परिचित व आश्वस्त नहीं हैं। संस्कारों के महत्त्व की जानकारी देने के लिए आर्यसमाज में संस्कार चन्द्रिका, संस्कार समुच्चय,

संस्कार भास्कर आदि ग्रन्थ उपलब्ध हैं। स्वाध्यायशील आर्य बन्धुओं को इन ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। विद्वानों को संस्कारविहीन और आर्यसमाज के सिद्धान्तानुसार संस्कार कराने वाले परिवारों में गुण दोषों का वा उन्नति अवनति का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत करना चाहिये। हमें यह उचित लगता है कि सभी संस्कारों को कराते हुए आधुनिक शिक्षा का ग्रहण भी आर्य बन्धुओं व परिवारों को अपने बच्चों को कराना चाहिये। ऐसा होने पर बच्चों में वैदिक संस्कारों सहित आधुनिक ज्ञान विज्ञान भी आश्रय पा सकेगा और वह आधुनिक शिक्षा वाले बच्चों से प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे। वह भी इंजीनियर, डाक्टर, प्रबन्धक पटु होने के साथ आईएएस, राजनेता आदि बन सकेंगे।

आज हम देश में ऐसे लोगों व नेताओं को देख रहे हैं जो आर्यसमाज व वैदिक विचारधारा से किसी प्रकार से जुड़े नहीं है परन्तु फिर भी अच्छे व प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। राजनीति में लोग हैं जो पौराणिक व सनातनी संस्कारों के हैं। वह योगासन, ध्यान आदि की क्रियायें भी करते हैं। व मूर्तिपूजा भी करते हैं। वह सभी पौराणिक कर्मकाण्डों के प्रति अपनी आस्था व विश्वास को छुपाते नहीं हैं और देश की राजनीति सहित विश्व में भी उनका गौरवपूर्ण स्थान है। हमें यह लगता है कि सभी विचारधारायें, भले ही वह कुछ-कुछ व कुछ अधिक वेद सम्मत न भी हों, तो भी मनुष्यों का जीवन किसी न किसी रूप में तो विकसित होता ही है। वैदिक विचारधारा मनुष्य के जीवन से असत्य, अज्ञान, अन्धविश्वास, मिथ्या विश्वास, अनावश्यक व अज्ञानाधारित कर्मकाण्ड को दूर करती है। आध्यात्मिक दृष्ट से आर्यसमाज का विद्वान व अनुयायी और व्यक्तियों से अधिक प्रबुद्ध व ज्ञान रखने वाला होता है। वह सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, वेदों व आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, समाज सेवा आदि कार्यों को करता है। उसका व्यक्तिगत जीवन अन्यों से उत्तम होता है। इसके भी अपवाद समाज में मौजूद हैं। कुछ आदर्श जीवन के विपरीत कार्य करने वाले अधिकारी व नेता भी समाज में हैं। उनमें साथ मिलकर व योग्यता का सम्मान करने का गुण जितना होना चाहिये उतना दिखाई नहीं देता। आपसी झगड़ों को कोर्ट कचहरी से सुलझाने में भी वह परहेज नहीं करते। वैदिक संस्कारों के होकर भी वह इन्हें भूले हुए दिखाई देते हैं। संगठन सूक्त और शान्ति पाठ करने के बावजूद इन मंत्रों की भावना का उन लोगों में कोई स्थान दिखाई नहीं देता। ऐसी स्थिति में यह विचारणीय हो जाता है कि आर्य संस्कारों के होने पर भी मनुष्य संस्कारविहीन मनुष्य

जैसा क्यों हो जाता है? इसका अर्थ यही लगता है कि वह कहीं न कहीं लोकैषणा, वित्तैषणा या पुत्रैषणा से ग्रसित होता है। इसमें उनका प्रारब्ध भी सहायक हो सकता है। आर्य नेताओं में अभिमान आदि होता है। मन, वचन व कर्म से एक होने वाले विद्वान व नेता कम ही होते हैं। इसी कारण शायद वह अपने आदर्श व्यवहार व गुणों से भटक जाते हैं। हम संस्कारों की चर्चा कर रहे थे और हमें लगा कि यह विषय भी कुछ-कुछ संस्कारों से जुड़ा है, अतः इसे भी चर्चा में ले लिया।

स्वामी दयानन्द उच्च कोटि के ईश्वर व वेद भक्त, वेदों के उच्च कोटि के विद्वान थे। वह सच्चे योगी भी थे। वह वेदर्षि थे। उनका कोई भी शब्द व वाक्य सत्य के विपरीत नहीं हो सकता। अतः संस्कारों पर विद्वानों को विशेष ध्यान देना चाहिये और अपने प्रवचनों में इसे भी प्रमुखता देनी चाहिये और इससे जुड़े प्रमाणों, युक्तियों व उदाहरणों को प्रस्तुत कर वैदिक संस्कारों को करने व उनके अनुसार जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा करनी चाहिये। महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में जिन संस्कारों का विधान किया है वह सभी समाज व देश देशान्तर में प्रचलित होने चाहिये, इस ओर हमें ध्यान देना है। इस चर्चा को यहीं पर विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

"वैदिक विवाह का स्वरूप और आधुनिक विवाह परम्परा में धन का अपव्यय"

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

संसार का सबसे प्राचीन धर्म व संस्कृति वैदिक धर्म है। संसार के सभी मनुष्यों का धर्म एक ही होता है और वह वैदिक धर्म ही है। वैदिक धर्म वेदानुकूल सिद्धान्तों पर आधारित मान्यताओं के पालन को कहते हैं। वेद से भिन्न इतर मान्यताओं का पालन धर्म नहीं होता। आजकल संसार में जितने भी मत-मतान्तर प्रचलित हैं वह धर्म नहीं अपितु मत हैं जिनका प्रचलन उन मतों के प्रर्वतकों ने किसी देश व काल विशेष में किया है। इन मतों का कुछ भाग वेदोनुकूल होने से धर्म है परन्तु बहुत सी बातें ऐसी भी हैं जो वेदानुकूल न होने से धर्म न होकर अनुचित व अनावश्यक हैं। इससे संसार में सब मनुष्यों का एक धर्म होने में बाधा उत्पन्न होती है और भिन्न-भिन्न मतों के अनुयायियों का भी कल्याण नहीं होता। लोग मतों की अविद्या में

फँस कर अपने हीरे रूपी जन्म को नष्ट कर डालते हैं। दूसरी ओर पाश्चात्य जीवन शैली के कारण हमारे वैदिक धर्मी लोग भी प्रभावित हो रहे हैं। वह भी अविद्या से ग्रस्त हो रहे हैं। उनके घरों व परिवारों की सन्तानें भी अधिकांशतः पाश्चात्य मान्यताओं के आधार पर अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं। उनके घरों में विवाह आदि जो भी आयोजन होते हैं वह सब भी प्रायः वैदिक मत के अनुसार न होकर पाश्चात्य जीवन शैली पर आधारित मान्यताओं के अनुसार हो रहे हैं। केवल विवाह संस्कार कुछ-कुछ वैदिक रीति से ही होता है और वह भी सभी में नहीं अपितु कुछ थोड़े से आर्य परिवारों में। कुछ आर्य परिवारों में विवाह संस्कार भी पौराणिक विधि विधानों के अनुसार कराने पड़ते हैं। इसका कारण यह होता है कि एक परिवार आर्यसमाजी है तो दूसरा पौराणिक वा सनातनी। अनेक बार सनातनी परिवारों की बातें आर्य परिवार वालों को माननी पड़ती हैं जिससे आर्य परिवारों को विवाह संस्कार अपनी आर्य पद्धति से कराने में बाधा आती है। यह सब आजकल के समाज में हो रहा है। आर्यसमाज के प्रचार में न्यूनता व उसके निष्प्रभावी होने से समाज में अज्ञान व मिथ्या मान्यताओं का प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। जो विवाह कुछ हजार या लाख दो लाख रुपये में हो सकते हैं उस पर कुछ घंटे के कार्यक्रम में कई लाख रुपये व्यय किये जाते हैं और जीवन भर की कमाई उसी में व्यय वा नष्ट हो जाती है। कई लोगों को तो विवशता के कारण अपनी सम्पतियाँ बेच कर या ऋण लेकर इन कार्यों को पूरा करना पड़ता है। यदि आज की परिस्थितियों पर विचार करें तो समाज एक ऐसी अवस्था में पहुँच गया है। जहाँ से उसे वापिस वैदिक मान्यताओं पर ले जाना कठिन व असम्भव प्रतीत होता है।

ऋषि दयानन्द ने विवाह का उल्लेख कर आश्वलायन गृह्यसूत्र के आधार पर लिखा है कि विवाह उसको कहते हैं कि जो पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत द्वारा विद्याबल को प्राप्त तथा सब प्रकार से शुभ गुण-कर्म-स्वभावों में तुल्य, परस्पर प्रीतियुक्त होके सन्तानोत्पत्ति और अपने-अपने वर्णाश्रम के अनुकूल उत्तम कर्म करने के लिए स्त्री और पुरुष का सम्बन्ध होता है। स्वामी जी ने इससे सम्बन्धित आश्वलायन गृह्यसूत्र, पारस्कर एवं गोभिलीय गृह्यसूत्र आदि के प्रमाण भी दिये हैं। स्वामी जी प्राचीन वैदिक ग्रन्थ शौनक गृह्यसूत्र के आधार पर विधान करते हैं कि उत्तरायण शुक्लपक्ष के अच्छे दिन अर्थात् जिस दिन प्रसन्नता हो, उस दिन विवाह करना चाहिए। वह यह भी कहते हैं

कि बहुत से आचार्यों का ऐसा भी मत है कि सब कालों व सब दिनों में विवाह करना चाहिये अथवा विवाह किया जा सकता है। शास्त्र वचनों के आधार पर वह कहते हैं कि जिस दिन प्रसन्नता हो उस दिन सर्वथा शुभ गुणादि से उत्तम जो स्त्री हो उससे पाणिग्रहण करना चाहिये। स्वामी जी फलित ज्योतिष व उसके ग्रन्थों के विधानों को नहीं मानते। आजकल जिस प्रकार से फलित ज्योतिष के ग्रन्थों के अनुसार कन्या व युवक की जन्मपत्री व उसमें दिये हुए राशि, नक्षत्रों आदि के अनुसार विवाह की तिथि निश्चित की जाती है, हमारे प्राचीन शास्त्रकार व महर्षि दयानन्द उसके विरुद्ध हैं व उनके वचनों से आधुनिक तिथि निर्धारण आदि का खण्डन होता है। प्राचीन शास्त्र यहाँ तक विधान करते हैं कि सब कालों में विवाह किया जा सकता है। यदि हम पूरे विश्व पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि यूरोप, मुस्लिम देशों व कम्यूनिस्ट देशों में विवाह किसी तिथि विशेष पर न करके सभी तिथियों व समयों में किया जा सकता है। वहाँ विवाह सफल भी होते हैं। परिवार स्वस्थ, सुखी व दीर्घ जीवी होते हैं। वैसा यहाँ ज्योतिषियों के अनुसार विवाह करने पर भी नहीं होता। यह आश्चर्य कि बात है कि विधर्मी तो वेद व शास्त्रों के अनुसार बिना तिथि के विवाह कर लेते हैं और वह सफल भी होते हैं जबकि हमारे देश के हमारे पौराणिक बन्धु उन विधानों के विरुद्ध विधान निश्चित करते हैं जिससे समाज में अनेक प्रकार की अव्यवस्थायें उत्पन्न होती हैं। हम अनुभव करते हैं कि ऋषि दयानन्द जी द्वारा अपनी पुस्तक संस्कार विधि में दिये गये विधानों का पालन किया जाना चाहिये। विवाह संस्कार का सबसे उपयुक्त समय गोधूलि वेला होता है। यदि पौराणिक भाई इस समय पर ही विवाह करायें तो यह उचित होगा। रात्रि के समय में अज्ञानता के कारण मुहूर्त निकाल कर निशाचरों की तरह जागना व विवाह संस्कार करना कराना उचित नहीं है। अतः वर्तमान परम्परा का परिमार्जन आवश्यक प्रतीत होता है। हमें नहीं लगता कि ईसाई, मुसलमान, सिख व साम्यवादी लोग रात्रि 11.00 बजे व उसके बाद संसार भर में कहीं अपने विवाह सम्पन्न करते कराते होंगे।

ऋषि दयानन्द ने एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी लिखी है कि वधू और वर की आयु, कुल, वास्तव्य स्थान, शरीर और स्वभाव की परीक्षा अवश्य करें अर्थात् दोनों सज्ञान और विवाह की इच्छा करने वाले हों। यह परीक्षा कन्या व वर के माता-पिता, आचार्य व वृद्ध बुद्धिमान सगे सम्बन्धी कर

सकते हैं। इन लोगों का धार्मिक अर्थात् वैदिक धर्मी होना उपयुक्त हो सकता है। ऐसा करने पर हिन्दू समाज में व्याप्त जन्मना जातिवाद की कुप्रथा, जिसे ऋषि दयानन्द ने मरण व्यवस्था कहा है, कुछ समय बाद समाप्त हो सकती है। स्वामी दयानन्द जी यह भी कहते हैं कि स्त्री की आयु से वर की आयु न्यून डयोढ़ी और अधिक से अधिक दूनी हो सकती है वह हो। इस पर शरीर विज्ञानियों को विशेष ध्यान देना चाहिये और इसमें जो वैज्ञानिक रहस्य है, उसे जन सामान्य को बताना चाहिये।

कन्या व युवक का विवाह दो भिन्न कुलों वा परिवारों के मध्य सम्पन्न किया जाता है। दोनों कुलों की परीक्षा किस प्रकार करनी चाहिए इस पर भी ऋषि दयानन्द जी ने शास्त्रों के आधार पर विधान किया है व अपने विचार लिखे हैं। उनके अनुसार गृहस्थ धारण करने के लिए कन्या व वर को चार, तीन, दो अथवा न्यूनतम किसी एक वेद का यथावत् पढ़ा हुआ होना चाहिये और इसके साथ ब्रह्मचारी भी होना चाहिये। उनके अनुसार विवाह में अपने वर्ण की कन्या व वर को प्राथमिकता देनी चाहिये। यह भी बता दें कि ऋषि दयानन्द जन्मना जातिवाद को नहीं मानते। वह गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था को मानते हैं। एक विशेष विधान उन्होंने यह किया है कि कन्या माता की 6 पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हो। द्विजों में यही कन्या विवाह के लिए उत्तम होती है। स्वामी जी 10 कुलों को विवाह के लिए वर्जित करते हैं। वह कुल हैं पहला जिस कुल में उत्तम क्रिया न हो। दूसरा जिस कुल में कोई भी उत्तम पुरुष न हो। तीसरा जिस कुल में कोई विद्वान न हो। चौथा जिस कुल में शरीर के ऊपर बड़े-बड़े लोम वा बाल हों। पांचवाँ जिस कुल में बवासीर हो। छठा जिस कुल में क्षय रोग हो। सातवाँ जिस कुल में अग्निमन्दता से आमाशय रोग हो। आठवाँ जिस कुल में मृगी रोग हो। नवाँ जिस कुल में श्वेत कुष्ठ हो और दसवाँ जिस कुल में गलितकुष्ठ आदि रोग हों। स्वामी जी कहते हैं कि ऐसे कुल यदि गाय आदि पशु, धन और धान्य से कितने ही बड़े हों तथापि उन कुलों की कन्या व वरों का परस्पर विवाह नहीं होना चाहिये। संस्कार विधि में स्वामी जी ने आठ प्रकार के विवाहों पर भी प्रकाश डाला है।

स्वामी दयानन्द चार वेदों के विद्वान व ऋषि थे। इसके साथ ही उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार भी किया हुआ था। विवाह विषय पर वह कहते हैं कि यदि माता-पिता कन्या का विवाह करना चाहें तो अति उत्कृष्ट

शुभगुण-कर्म-स्वभाव वाले, कन्या के सदृश रूपलावण्यादि गुणयुक्त वर ही को, चाहे वह कन्या माता की छह पीढ़ी के भीतर भी हो, तथापि उसी को कन्या देना अन्य को कभी न देना कि जिससे दोनों अति प्रसन्न होकर गृहाश्रम की उन्नति और उत्तम सन्तानों की उत्पत्ति करें। चाहे मरण पर्यन्त कन्या पिता के घर में बिना विवाह के बैठी भी रहे, परन्तु गुणहीन असदृश, दुष्ट पुरुष के साथ कन्या का विवाह कभी न करें और वर-कन्या भी अपने आप स्वसदृश के साथ ही विवाह करें। स्वामी जी ने इस प्रश्न का उत्तर भी संस्कार विधि में दिया है कि अपने गोत्र वा भाई-बहिनों का परस्पर विवाह क्यों नहीं होता। इसके साथ ही स्वामी जी ने इस प्रश्न पर भी अपने विचार दिये हैं कि विवाह अपने-अपने वर्ण में होना चाहिये वा अन्य वर्ण में भी। स्वामी जी ने विवाह संस्कार की विस्तृत विधि भी लिखी है जो उनके समय में विद्यमान नहीं थी। उन दिनों लोग विवाह के यथार्थ महत्व व उद्देश्य से अनभिज्ञ थे। स्वामी जी द्वारा लिखित विवाह विधि से आर्यसमाज द्वारा विवाह सम्पन्न किये जाते हैं जिन्हें कुछ समझदार पौराणिक भी उत्तम मानकर अपनाते हैं।

आजकल हिन्दू समाज में विवाह संस्कार में अनेक अनावश्यक परम्परायें जोड़ दी गई हैं जिससे विवाह अतीव व्यय साध्य हो गया है। निर्धन लोग तो अपनी सन्तानों का विवाह करा ही नहीं सकते। दहेज जैसा महारोग हिन्दू समाज में है। वस्त्रों व आभूषणों पर ही लाखों रुपये फूँके जाते हैं। विवाह प्रायः रात्रि में किये जाते हैं। पचासों प्रकार के भोजन बनाये जाते हैं। लोग एक ही समय में आईसक्रीम और काफी साथ-साथ पीते हैं। तले हुए पदार्थों की अधिकता होती है। इतने पकवान बनते हैं कि सबको व अधिकांश को खाने पर पेट पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो रोग के रूप में सामने आता है। होटल व वैडिंग प्वाइण्ट पर भी लाखों रुपये व्यय किये जाते हैं। आजकल शहरों में काकटेल मदिरा मांस पार्टी नाम का महारोग भी चला है। इसमें मांस व शराब परोसी जाती है। यह कुप्रथा तत्काल बन्द होनी चाहिये परन्तु हम देख रहे हैं कि समाज के मार्गदर्शक हमारे धर्मगुरु, पण्डे व पुजारी तथा मठाधीश आदि सब मौन हैं। ऋषि दयानन्द जी के जीवन चरित में एक घटना आती है जब उन्होंने अपने एक भक्त को अपने पुत्र का महंगा विवाह करने पर मीठे शब्दों में उसे फटकारा था। हमें लगता है कि वर्तमान की विवाह प्रथा हिन्दू समाज को कमजोर व रोगी बना रही है। शिक्षित व्यक्तियों

की बुद्धि का भी दिवाला निकल गया प्रतीत होता है। यह लोग किसी निर्धन व भूखे व्यक्ति को दो रोटियाँ आदर के साथ नहीं खिला सकते और विवाह में लाखों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। इतने रुपये से कितने ही बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध हो सकता है और कितनी ही गरीब कन्याओं के सादगी से युक्त विवाह कराये जा सकते हैं। समाज के ठेकेदारों को इस समस्या पर विचार करना चाहिये। यदि नहीं करेंगे तो समाज का अहित नहीं रोका जा सकता। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

ईश्वर सर्वरक्षक

ईश्वर आह्ववान और रक्षा:–वेद मन्त्रों में बातें संकेत रूप में कही गई हैं। जो संकेत की विद्या को जानता है वह उसे बढ़ाते-बढ़ाते उसके तल तक पहुँच जाता है। वाक्य का सीधा अर्थ लगाने से अनर्थ हो जाये। जो भाषा विज्ञान (शैली) को नहीं जानते वे 'ईश्वर-आह्वान' का अर्थ ऐसा करते हैं जैसे लोक में दूर के व्यक्ति को बुलाते हैं। यहाँ आह्वान का अर्थ है जो ईश्वर हमारे निकट पहले से उपस्थित है उसके गुण (आनन्द, ज्ञान आदि) की प्राप्ति के लिये उससे आबद्ध हो जाना।

ईश्वर कैसे रक्षा करता है?:–लोक समझते हैं जैसे एक यात्री जाता है, चोर उसे लूटता है। पर एक सांप निकल कर चोर को डसता है, वह यात्री बच गया। कुएँ में तीन पड़े, दो मरे एक बच गया। दुर्घटना में कुछ मर गये, कुछ बच गये। यह ईश्वर के रक्षा का परिणाम नहीं। ये दृष्टान्त गलत हैं। यह सब क्रिया-भेद से परिणाम भेद है। एक बच्चा कुएँ में दीवार से टकराया वह मर गया, दूसरा सीधा पानी में पड़ा वह बच गया। किसी को दुर्घटना में मर्म स्थान पर चोट लगने पर वह मर गया, अन्य को कठोर स्थान पर लगने से वह नहीं मरा, बच गया। ईश्वर की रक्षा का क्षेत्र वहाँ तक रहता है जहाँ तक, जब तक जीवात्मा की स्वतन्त्रता का अवरोध नहीं होता, हनन नहीं होता। यदि जीवात्मा अल्पज्ञता से, भूल से, स्वभाव से द्वेष के कारण दूसरे को कष्ट देता है, तो ईश्वर हाथ पकड़ कर उसकी स्वतन्त्रता का हनन नहीं करेगा तथा पीड़ित होने वाले की उस समय रक्षा भी नहीं करेगा। हाँ, इसका दण्ड एवं क्षतिपूर्ति बाद में न्याय के रूप में अवश्य करता है।

नास्तिक जो ईश्वर को नहीं मानते वे कहते हैं कि संसार के बनने में

ईश्वर का सहयोग नहीं। यह सब रचना अपने आप ही हो जाती है; परन्तु व्यक्ति अपने शरीर की रचना को गौर से देखने पर आश्चर्यचकित हो जायेगा। क्या मनुष्य यूँ ही पैदा हो गये? और हो रहे हैं? रचना विशेष को देखकर अन्त में यह मानना पड़ता है कि दृश्यमान पदार्थ व प्राणियों के शरीर ईश रचना से उत्पन्न होते हैं, उसके सहारे से जीते हैं तथा उस द्वारा प्रलय को प्राप्त होते हैं।

ईश्वर हमारी रक्षा अनेक प्रकार से करता है

(१) भगवान् की रक्षा का एक भाग यह है कि उसकी रक्षा के बिना शरीरधारी जीवन धारण नहीं कर सकता। रक्षित अर्थात् जीवित नहीं रह सकता। माँ के पेट में बच्चा किस प्रकार जीवित रहता है। ईश्वर ने माँ की नाड़ी से बच्चे की नाड़ी का सम्बन्ध का पोषण देकर रक्षा की है। हम श्वास लेते, खाते, पचाते हैं। शरीर में सात धातु-रस-रक्त मांस आदि बनते हैं, यह व्यवस्था ईश्वर ने की है।

(२) बुरे काम करने में भय, शंका, लज्जा, संकोच उत्पन्न करता है तथा अच्छा काम करने की योजना में निर्भीकता, आनन्द और उत्साह पैदा करके, पितृवत्-मातृवत् हमारी रक्षा करता है।

(३) ईश्वर के माध्यम से सब क्रियायें हो रही हैं। वह जीवन देता है, सब व्यवस्था करता है। ईश्वर प्रदत्त साधनों के बिना व्यक्ति क्षण भर भी नहीं जी सकता।

(४) आप्त (विद्वान्) लोक ईश्वर का सामर्थ्य प्राप्त करके हमारी रक्षा करते हैं। भिन्न-भिन्न विद्या क्षेत्र में अच्छे धार्मिक विद्वान् जैसे आयुर्वेद के क्षेत्र में धार्मिक वैद्य प्राणों का देने वाला होता है। मूर्ख अधार्मिक वैद्य प्राण हरता है। विज्ञान के क्षेत्र में भी धार्मिक वैज्ञानिक खोज करके अनेकों का भला करता है। अधार्मिक वैज्ञानिक विनाश के साधन जुटा कर हानि भी करते हैं। धन उपार्जन के क्षेत्र में भी धार्मिक विद्वान् कृषि अनुसंधान करके अधिक उपज का मार्ग खोजकर भलाई करता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में काम, क्रोध, लोभ, मोह मनुष्यों को पीसते हैं, धार्मिक विद्वान् अपने उपदेश से उनका निवारण करता है। जो व्यक्ति विद्वान् व धार्मिक बन जाता है तो उस विद्या से जो सुख मिलता है

उसके आगे सांसारिक सुख हजारवाँ अंश भी नहीं होता। जब धार्मिकता नहीं जुड़ती तो धन-बल-विद्या अभिमान को पैदा करते हैं। जो शास्त्र पढ़ा हो पर यम-नियम का पालन नहीं करता, तो वह घमण्डी हो अपना व समाज का अनिष्ट करता है।

(५) मानव ही क्या, हर प्राणी को सुरक्षित व सुखी रखने के लिये सर्जनहार ने अनुपम भेंट प्रदान की है। ईश्वर प्रदत्त हवा, पानी, प्रकाश खुराक (वृक्ष-वनस्पति, फल-फूल) आदि जीवन में आनन्द, उमंग, उत्साह हर्ष आदि प्रदान करते हैं।

(६) अच्छे-बुरे-कर्म-फल रूप अच्छी-बुरी योनि द्वारा सुधार के लिये, कल्याण की भावना से दु:ख-सुख देकर रक्षा करता है। राजा न्यायकारी हो तो पाप अत्याचार बन्द हो जाते हैं। सुख-शान्ति की स्थापना में राजा रक्षक है। इसी प्रकार ईश्वर बुरे कर्मों का फल गधे-घोड़े बनाकर, राजा देकर हमारी रक्षा करता है।

(७) सूर्य-पृथ्वी की उचित दूरी रख बुद्धिमत्ता से हमारे प्राणों की रक्षा करता है। वर्षा, अग्नि, जल, वायु आदि से शरीर और जगत् की रक्षा करता है। सब प्राणियों को अपने प्राणों की रक्षा के लिये सतर्कता का स्वाभाविक ज्ञान व मनुष्य को विविध कार्य क्षेत्र में संलग्न रखते हुए स्वरक्षण हेतु बुद्धि आदि साधन दिये हैं।

(८) वेद ज्ञान देकर रक्षा–ईश्वर ने सब पदार्थ बनाकर दिये हैं। इनका उपयोग कैसे करें इसके लिये वेद-ज्ञान भी दिया है। आज भी यदि हम ईश्वराज्ञा का पालन व उपासना करते हैं तो ईश्वर ज्ञान देता है, रक्षा करता है। **'स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।'** ईश्वर पूर्व हुए गुरुओं का भी गुरु है, आगे भी रहेगा। जैसे गुरु विद्या देकर रक्षा करता है इसी प्रकार ईश्वर भी विद्या द्वारा रक्षा करता है।

इस प्रकार ईश्वर की विविध रक्षाओं को जानें व समझें। जब व्यक्ति धनवान्, बलवान्, रूपवान, विद्वान्, बुद्धिमान् होकर यह समझे कि वह सब ईश्वर प्रदत्त है मेरा नहीं, तो वह निष्काम भाव से तन, मन, धन से सेवा व रक्षा करता है, बदले की भावना से नहीं करता। ईश्वर जिस प्रकार की रक्षा करता है उसको वैसा जानता है, तो ईश्वर से सम्बन्ध जुड़ता है, उलटा जानने से नहीं। ईश्वर को गलत मानने, गलत ढंग से पूजा करने से ईश्वर से सम्बन्ध नहीं जुड़ता। शुद्ध उपासना द्वारा ईश्वर से सम्बन्ध जुड़ने पर बुराई से हटकर दु:ख से छूट जाता है।

अन्य उपलब्ध प्रकाशन

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय कृत साहित्य

युगनिर्माता सत्यार्थप्रकाश सन्दर्भ दर्पण	70.00
वेद और स्वामी दयानन्द	40.00
महर्षि दयानंद की देन	30.00
मातृभूमि वैभव	125.00
बंगाल में शास्त्रार्थ	40.00
प्रार्थना प्रवचन	80.00
प्रेरक संस्मरण	50.00
आर्यसमाज परिचय और प्रासंगिकता	15.00
वेद वैभव	150.00
वेद-वन्दन	160.00
वेद-वीथिका	160.00
प्रभात वन्दन	25.00
स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन	50.00

डॉ. सुरेन्द्र कुमार कृत साहित्य

सत्यार्थ प्रकाश दो भागों में	1200.00
महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	300.00
महर्षि मनु बनाम डॉ. अम्बेडकर	150.00
वैदिक आख्यानों का वैदिक स्वरूप	150.00
मनुस्मृति का पुनर्मूल्यांकन	400.00
हिन्दी काव्यों में वैदिक आख्यान	120.00

विविध विद्वानों का महत्वपूर्ण साहित्य अब उपलब्ध

मानव धर्म शास्त्र का सार	पं. भीमसेन शर्मा	150.00
वैदिक वन्दन	स्वामी ब्रह्ममुनि जी	125.00
धर्म तर्क की कसौटी पर	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	30.00
अद्वैतवाद	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	160.00
वैदिक सिद्धान्त विमर्श	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	25.00
शंकर भाष्यालोचन	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	150.00
सत्यार्थ प्रकाश दर्शन	सं. आचार्य प्रदीपजी, रेवली	60.00
गीता का रहस्य	सं. आचार्य प्रदीपजी, रेवली	200.00
भास्कर प्रकाश	श्री तुलसीराम स्वामी	200.00
जीवन ज्योति	पं. चमूपति एम.ए.	150.00
युक्तिवाद	पं. लक्ष्मणजी आर्योपदेशक	80.00
वैदिक गीता	प. आर्य मुनि	160.00
दु:खी दिल की पुरदर्द दास्तां	स्वामी श्रद्धानन्द	220.00
श्रीमभगवद्गीता: प्रश्नोत्तरी	कन्हैयालाल आर्य	280.00
Worship	Pt. Ganga Prasad Upadhyaya	100.00
The Marriage Divine	Pt. Dharma Dev Vidhyamartand	20.00
Swami Shraddhanand	Pt. Dharma Dev Vidhyamartand	70.00

फरवरी २०१८ Registered with Regn. of News Paper for India
वेदप्रकाश R.No. 627/57 Regd. No. DL(DG-11)/8030/2018-20, U(DGPO) 01/2015-17
Posted at Delhi RMS, Delhi-110006

चारों वेद-भाष्य (8 भागों में) रु. 5600.00

संपूर्ण वेद भाष्य प्रथम बार कम्प्यूटर द्वारा मुद्रित, शुद्धतम् सामग्री नयनाभिराम छपाई, आकर्षक आवरण, उत्तम कागज, मजबूत जिल्द, सुन्दर स्पष्ट टाईप, कुल 10440 पृष्ठों में पूर्ण, शब्दार्थ व मन्त्रानुक्रमणिका सहित, आठ खण्डों में प्रस्तुत।

ऋग्वेद (चार भागों में) -महर्षि दयानन्द सरस्वती	**रु. 2800.00**
अथर्ववेद (दो भागों में) -पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी	**रु. 1500.00**
यजुर्वेद (एक भाग में) -महर्षि दयानन्द सरस्वती	**रु. 600.00**
सामवेद (एक भाग में) -पं. रामनाथ वेदालंकार	**रु. 700.00**

Forthcoming Publications

The Original Philosophy of Yoga		
(The Yogasutras of Patanjali) Dr. Tulsiram Sharma		Rs. 200.00
Light of Truth	Dr. Chiranjeev Bharadwaj	Rs. 300.00

वर्ष 2017 के नये प्रकाशन

प्यारा ऋषि	**महात्मा आनन्द स्वामी**	**रु. 20.00**
संस्कृत वाक्य प्रबोध	**महर्षि दयानन्द सरस्वती**	**रु. 40.00**
विद्यार्थी जीवन रहस्य	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 25.00**
मृत्यु रहस्य	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 20.00**
मृत्यु और परलोक	**महात्मा नारायण स्वामी**	**रु. 125.00**
वैदिक मान्यताओं का वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक विवेचन-डॉ. राजपाल सिंह		**रु. 75.00**
Shri Satyanarayanavrat Katha Swami Jagdishwaranand		Rs. 30.00
Aryoddeshya Ratna Mala Mah. Dayanand Saraswati		Rs. 30.00

वर्ष 2016 के प्रकाशन

शान्ति मंत्र	**डॉ. पूर्ण सिंह डबास**	**रु. 15.00**
धर्म की परिभाषा	**डॉ. पूर्ण सिंह डबास**	**रु. 15.00**
आनन्द रस धारा	**प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**	**रु. 90.00**
यज्ञ-क्या? क्यों? कैसे?	**श्री मदन रहेजा**	**रु. 35.00**
बाल शंका समाधान	**श्री मदन रहेजा**	**रु. 25.00**
Mystery of Death	**Sh. Madan Raheja**	**Rs. 150.00**

प्राप्ति स्थानः विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

4408, नई सड़क, दिल्ली-6, दूरभाष 23977216, 65360255

Email: ajayarya16@gmail.com Web: www.vedicbooks.com